जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 32 संख्याः 343 प्रभात उदयपुर, मंगलवार 14 अक्टूबर, 2025 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

तेजस्वी यादव सोमवार देर शाम को पटना रवाना हो गए, अपनी दिल्ली यात्रा को सफल आंकते हुए

दिल्ली में मल्लिकार्जुन खड़गे, वेणुगोपाल, बिहार के प्रभारी कृष्णा अल्लावीरु से मुलाकात करके और सीटों के बँटवारे पर मोटा-मोटी सहमति प्राप्त करके

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 अक्टूबर। कांग्रेस और आरजेडी के बीच सीट बंटवारे पर सहमति बन गई है। तेजस्वी यादव सोमवार शाम पटना लौटे और सूत्रों के अनुसार, वे बातचीत से संतुष्ट और सकारात्मक मूड में हैं।

तेजस्वी यादव ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से मुलाकात की और राहुल गांधी से फोन पर बातचीत की, क्योंकि दोनों नेताओं की आमने-सामने मुलाकात नहीं हो पाई। तेजस्वी ने कांग्रेस महासचिव (संगठन) के.सी. वेणुगोपाल और बिहार के प्रभारी कृष्णा अल्लावरु के साथ भी बैठक की, जिसमें दोनों दलों के बीच सीटों का मोटा-मोटी खाका तय हो गया।

- हालांकि, तेजस्वी की राहुल गांधी से रुबरु बातचीत नहीं हुई, किन्तु फोन पर आरजेडी व कांग्रेस के बीच सीटों के बँटवारे का फार्मूला तय हो गया।
- फार्मूले के अनुसार, कांग्रेस को इकसठ सीटें मिलेंगी जो अपने आप में काफी बड़ी उपलब्धि मानी जाती है, कांग्रेस के लिए। क्योंकि गत चुनाव में काँग्रेस को सत्तर सीटें मिली थीं और वह केवल सत्रह सीटें जीत पाई थी।
- आरजेडी ने कांग्रेस को इतना अधिक एडजस्ट इसलिए भी किया, क्योंकि राहुल, लालू, राबड़ी व तेजस्वी के साथ डटकर खड़े रहे, जब न्यायालय ने इन तीनों के खिलाफ आरोप फाइनल करने का निर्णय लिया।
- अब पटना में ही तेजस्वी को महागठबंधन की ओर से मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करने की प्रक्रिया पूरी की जायेगी, क्योंकि तेजस्वी दिल्ली से पटना रवाना हो चुके हैं।

एक वरिष्ठ नेता का कहना है कि कांग्रेस को इस समझौते में 61 सीटें मिली हैं, जो हर लिहाज से अच्छी और सम्मानजनक संख्या है। उन्होंने कहा कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मदन राठौड़ की पत्नी बीमार, हैलीकॉप्टर से जयपुर ले गये

पाली, 13 अक्टूबर (नि.सं.)। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, पत्नी की तबीयत अचानक बिगड़ने पर हेलीकॉप्टर से पाली पहुंचे तथा न्यूरो फिजिशियन को दिखाने के लिए पत्नी को हेलीकॉप्टर से ही जयपुर लेकर गए। मदन राठौड़ के साथ में विधि एवं न्याय मंत्री जोगाराम पटेल भी थे।

पाली के बांगड़ हॉस्पिटल में जिला कलेक्टर एलएन मंत्री, एसपी आदर्श सिद्ध सहित, बड़ी संख्या में भाजपा के पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष उन्हें जयपुर में न्यूरो फिज़िशियन को दिखायेंगे।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ की पत्नी ऊषा राठौड़ का उपचार करने वाले बांगड़ हॉस्पिटल के डॉ प्रवीण गर्ग, राकेश सोनी, विकास गहलोत और सेवानिवृत्त प्रधान मैडिकल ऑफिसर की सलाह के बाद, उन्हें न्यूरो फिजिशियन को दिखाने के लिए जयपुर रैफर किया गया।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष राठौड़ अपनी पत्नी को न्यूरो फिजिशियन को दिखाने के लिए हेलीकाप्टर से अपने साथ जयपुर के लिए लेकर रवाना हुए।

सीट शेयरिंग की घोषणा होते ही असंतोष फूट पड़ा एनडीए में

अमित शाह जल्दी ही पटना जाएंगे और सब कुछ ठीक करके ही लौटेंगे

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 अक्टूबर। रविवार को बिहार में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) द्वारा की गई सीट-बंटवारे की घोषणा के कुछ ही घंटों में एनडीए में उथल-पुथल मच गई। सत्ता पक्ष में अभूतपूर्व विद्रोह की लहर फैल गई। कई मौजूदा मंत्री और विधायक अपनी ही पार्टी नेतृत्व के खिलाफ खुलकर बगावत पर उतर आए। उनका आरोप है कि शीर्ष नेताओं ने विधानसभा चुनावों से पहले टिकट वितरण में भारी अन्याय किया और उनके राजनीतिक भविष्य को नष्ट कर दिया।

दिन की शुरुआत में एनडीए ने सीट बंटवारे का फार्मूला शानदार तरीके से घोषित किया था, ताकि सहयोगी दलों में एकता और समन्वय का संदेश दिया जा सके। लेकिन घोषणा के कुछ ही घंटों बाद एक के बाद एक हुई घटनाओं से हालात विस्फोटक हो गए, जिससे गठबंधन को अपनी उम्मीदवारों की अंतिम सूची स्थगित करनी पड़ी। पार्टी सूत्रों ने पुष्टि की कि सीट आवंटन को लेकर न केवल गठबंधन न केवल के भीतर बल्कि दलों के अंदर भी संघर्ष इतना बढ़ गया है कि स्थिति विभाजन की कगार पर पहुँच गई। इसने भाजपा और जेडीयू नेतृत्व को आपात समीक्षा बैठक बुलाने पर मजबूर कर दिया।

- पार्टी के अंतरंग सूत्रों ने कहा कि एनडीए में हालात बेहद विस्फोटक हैं भाजपा-जद (यू) नेतृत्व को आपात बैठक बुलानी पड़ रही है।
- भाजपा के केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने भाजपा के बिहार प्रभारी धर्मेन्द्र प्रधान पर प्रत्याशी चयन में भारी गड़बड़ी का आरोप लगाया। वहीं जद (यू) के वरिष्ठ मंत्री जय कुमार सिंह ने पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा व ललन कुमार सिंह पर टिकट बेचने का आरोप लगाया।
- विशेषज्ञों ने बताया कि दोनों दलों के कई नेता हैं, जिनके टिकट कटने जा रहे हैं और ये सभी निर्दलीय चुनाव लड़ने की धमकी दे रहे हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अब एनडीए में ''बिग ब्रदर'' नहीं रहे नीतीश

संभावना है, अगर एनडीए जीता तो भी नीतीश को शायद मु.मंत्री न बनाया जाए

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 अक्टूबर। अगर राजनीति को धारणाओं का खेल कहा जाए, तो आज घोषित हुई एनडीए की सीट बंटवारे की व्यवस्था जेडीयू नेता और मौजूदा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के लिए नकारात्मक संदेश लेकर आई है, क्योंकि भाजपा और जेडीयू, दोनों ने 243 सदस्यीय बिहार विधानसभा की 101-101 सीटों पर चुनाव लड़ने का निर्णय लिया है।

पिछले चुनावों में, जेडीयू ने हमेशा भाजपा से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़े थे, जिससे कुमार का गठबंधन में 'बड़े भाई' वाला दर्जा कायम रहता था। अपने राजनीतिक जीवन के इस पतझड़ में उस दर्जे से वंचित होना उनके लिए एक झटका माना जा रहा है। सीटों के बँटवारे के इस घटनाक्रम को इस संकेत के रुप में भी देखा जा सकता है कि आगामी चुनावों में एनडीए की जीत होने पर भी नीतीश कुमार को शायद मुख्यमंत्री नहीं बनाया जाए।

- नीतीश की पार्टी जद (यू) और भाजपा 101-101 सीटों पर चुनाव लड़ेंगे। अब तक हमेशा से ही नीतीश की पार्टी जद (यू) को भाजपा से ज्यादा सीटें मिलती थीं, चाहे एक ही सीट अधिक क्यों न हो। शेष सीटें अन्य दलों को मिली हैं, इस लिहाज से भाजपा का पलड़ा भारी है।
- निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने इस पर बड़ी सटीक टिप्पणी की। उन्होंने कहा, नीतीश को मालूम होना चाहिए, जद (यू) की 101 सीटों की तुलना में भाजपा 130 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। लोजपा (चिराग गुट) की 29 सीटें भी भाजपा की ही मानी जानी चाहिए।

राजनीतिक विरोधियों ने पहले ही निशाना साधना शुरू कर दिया है। निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने कहा, ''नीतीश कुमार को समझ लेना चाहिए कि जेडीयू की 101 सीटों के मुकाबले, भाजपा असल में 130 सीटों पर चुनाव लड़ेगी।'' जाहिर है, उनका इशारा चिराग पासवान की एलजेपी-आर को दी गई 29 सीटों की ओर था। याद दिला दें कि 2020 के चुनावों में, चिराग पासवान ने नीतीश की पार्टी के खिलाफ उम्मीदवार उतारकर जेडीयू को भारी नुकसान पहुंचाया था। एनडीए द्वारा घोषित समझौते के अनुसार, जीतन राम मांझी और उपेन्द्र कुशवाहा के दल छह-छह सीटों पर चुनाव लड़ेंगे।

इधर, प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने भविष्यवाणी की है कि चुनावों के बाद जेडीयू के टूटने की पूरी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कोल्ड्रिफ कफ सिरप बनाने वाली कम्पनी बंद

चेन्नई, 13 अक्टूबर। कोल्ड्रिफ कफ सीरप से हुई मौतों के बाद तमिलनाडु सरकार ने बड़ा एक्शन लिया है। कफ सीरप बनाने वाली कंपनी श्रीसन फार्मासूटिकल कंपनी का लाइसेंस रद कर दिया गया है। यह कफ सीरप पीने से सिर्फ मध्य प्रदेश में ही 22 बच्चों की मौत हो चुकी है।

तमिलनाडु ड्रग्स कंट्रोल विभाग ने कंपनी के खिलाफ यह कड़ा कदम उठाया है। राज्य स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, जांच पूरी होने के बाद कंपनी को औपचारिक रूप से बंद कर दिया गया है। कोल्ड्रिफ कफ सीरप में अत्याधिक मात्रा में डायएथिलीन ग्लाइकॉल (डीईजी) होने के संकेत मिले हैं। तमिलनाडु सरकार ने राज्य में दवाइयां बनाने वाली सारी कंपनियों को भी जांच करने के आदेश दिए हैं। वहीं, अदालत ने श्रीसन कंपनी के मालिक रंगनाथन को 10 दिन की पुलिस हिरासत में भेजा है। 9 अक्टूबर को मध्य प्रदेश एसआईटी ने रंगनाथन को गिरफ्तार किया था।

- तमिलनाडु सरकार ने इस कम्पनी, श्रीसन फार्मास्युटिकल्स का लाइसेंस रद्द कर दिया है।

अमेरिका व चीन में ट्रेड वॉर और भीषण होने का लाभ सीधे भारत को हो रहा है

अमेरिका द्वारा चीन पर सौ प्रतिशत टैरिफ और लगाने से चीनी माल अमेरिका में बहुत महँगा हो गया

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 अक्टूबर। अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते व्यापार युद्ध के बीच, भारत सबसे बड़े लाभार्थियों में से एक बनकर उभर सकता है, क्योंकि अमेरिकी ख़रीददार किफायती और भरोसेमंद आपूर्तिकर्ताओं की तलाश में चीन से बाहर जाने को मजबूर हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने 1 नवंबर से सभी चीनी वस्तुओं पर 100 प्रतिशत का नया शुल्क लगाने की घोषणा की है, जो पहले से लागू 30 प्रतिशत शुल्क के ऊपर होगा। यानी अब अमेरिकी बाज़ार में प्रवेश करते समय चीनी उत्पादों पर कुल 130 प्रतिशत शुल्क लगेगा। इस भारी मूल्य सीमा ने भारतीय निर्यातकों के लिए एक सुनहरा अवसर खोल दिया है, क्योंकि भारत से आने वाले उत्पादों पर शुल्क कहीं कम है और वे पहले से ही अमेरिकी आयातकों के बीच वस्त्र, खिलौने, इलेक्ट्रॉनिक्स और अक्षय ऊर्जा उपकरण जैसे क्षेत्रों में लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं।

- चीन पर एक सौ तीस प्रतिशत टैरिफ लगाये हैं ट्रंप ने और भारत पर पचास प्रतिशत। अब तक चीन छाया हुआ था अमेरिका में, खिलौनों, जूता-चप्पल व टैक्सटाइल प्रोडक्ट्स में।
- अब भारत के पास स्वर्णिम अवसर है चीन द्वारा छोड़े गए मैदान पर कब्जा करने का। ऐसी आशा की जा रही है कि अमेरिका से ऑर्डर की बाढ़ आएगी भारत के पास। अगर भारत के व्यापारी अपने प्रोडक्ट्स की गुणवत्ता व डिलीवरी स्टैंडर्ड्स को गिरने नहीं देते हैं तो भारत स्थाई लाभ लेने की पोज़ीशन में रहेगा।

भारत के लिए यह समय बेहद अनुकूल है। अमेरिका को होने वाला भारत का निर्यात पहले से ही 86.5 अरब अमेरिकी डॉलर का है, और अमेरिकी रिटेलर और निर्माता अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं के जोखिम को कम करने की कोशिश कर रहे हैं, ऐसे में यह बदलाव भारतीय व्यवसायों के लिए नए ऑर्डरों में तेज़ वृद्धि का कारण बन सकता है। भारतीय निर्यात संगठन महासंघ (एफ.आई.ई.ओ.) के अध्यक्ष एस. सी. रल्हन ने कहा, ''चीन ने बाज़ार की जो हिस्सेदारी खोई है, उसे हासिल करने का भारत के लिए यह सुनहरा अवसर है, जो एक दशक में एक बार आता है।'' उन्होंने आगे कहा, हमारे वर्तमान 86 अरब डॉलर के निर्यात में तेज़ी से वृद्धि हो सकती है, क्योंकि अमेरिकी ख़रीददार अपने स्रोतों की रणनीतियों को फिर से तय कर रहे हैं।''

ट्रंप की यह घोषणा 9 अक्टूबर को चीन के उस फ़ैसले के बाद आई है, जिसमें उसने दुर्लभ धातुओं के निर्यात पर रोक लगाई थी। ये धातुएं इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिक वाहनों और अक्षय ऊर्जा उद्योगों के लिए बेहद ज़रूरी हैं। इसके जवाब में वाशिंगटन ने भी चीनी उत्पादों पर और ज़्यादा शुल्क लगाने और सॉफ़्टवेयर निर्यात नियंत्रण सख्त करने का निर्णय लिया है, जिससे यह व्यापारिक संघर्ष और तेज़ हो गया है। लेकिन जहाँ दुनिया इस कारण होने वाली आपूर्ति बाधाओं को लेकर चिंतित है, वहीं भारत इस स्थिति से उत्पन्न व्यापारिक बदलाव का लाभ उठा सकता है। अमेरिकी बाज़ार में चीनी वस्तुएं अब बहुत महंगी हो जाएंगी, जबकि भारतीय उत्पादों पर तुलनात्मक रूप से केवल 50 प्रतिशत शुल्क लगेगा। इससे भारतीय सामान अधिक प्रतिस्पर्धी बन जाएंगे। यह वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के पुनर्गठन को भी प्रेरित कर सकता है, जिसमें भारत मध्यम और उच्च मूल्य वाले मैनुफैक्चरिंग क्षेत्र में, जो अब तक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

करुर भगदड़ की जांच सीबीआई को

नयी दिल्ली, 13 अक्टूबर। उच्चतम न्यायालय ने तमिलनाडु के करूर में हुई भगदड़ की जांच केन्द्रीय जाँच ब्यूरो (सीबीआई) से कराने का सोमवार को आदेश दिया।

न्यायमूर्ति जे के माहेश्वरी और न्यायमूर्ति एन वी अंजारिया की पीठ ने संबंधित आदेश पारित करते हुए शीर्ष अदालत के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति अजय रस्तोगी को इस जांच की निगरानी करने वाली समिति का प्रमुख नियुक्त किया। भगदड़ की जाँच के लिए विशेष जांच टीम (एसआईटी) गठित करने के मद्रास उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर शीर्ष अदालत ने अपना यह फैसला सुनाया।

अभिनेता से नेता बने विजय के नेतृत्व वाली राजनीतिक पार्टी तमिलगा वेत्री कझगम (टीवीके) की 27 सितंबर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश से अभिनेता से नेता बने विजय को भारी झटका लगा है।

हमास ने बीस इज़रायली बंधकों को रिहा किया, इज़रायल ने दो हजार फिलिस्तीनी कैदियों को छोड़ा

यह असंभव सा दिखने वाला काम इतनी जल्दी पूरा हो जाएगा, किसी को उम्मीद नहीं थी, अतः हर दृष्टि से यह महान उपलब्धि है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 अक्टूबर। सभी जीवित 20 इज़रायली बंधकों को हमास ने रिहा कर दिया है। यह कदम इज़रायल और हमास के बीच चल रहे संघर्ष को समाप्त करने की योजना के पहले चरण के रूप में उठाया गया है। इसके बदले में इज़रायल ने 2000 गिरफ्तार फ़िलिस्तीनियों को रिहा किया।

बंधकों और कैदियों की रिहाई दोनों तरफ़ बेहद भावनात्मक रही, एक ओर फ़िलिस्तीनियों ने अपने लोगों ज़ोरदार स्वागत किया, तो दूसरी ओर इज़रायली बंधकों का भी अपने परिवारों से भावनात्मक पुनर्मिलन हुआ।

दुर्भाग्य से, एकमात्र भारतीय हिंदू बंधक बिपिन जोशी इस चरण में हमास द्वारा रिहा किए गए लोगों में शामिल नहीं थे।

इज़रायल का कहना है कि अब हमास के पास कोई भी जीवित बंधक नहीं बचा है।

जबसे हमास के लड़ाकों ने हमला कर निर्दोष इज़रायलियों की हत्या की थी और फिर उनमें से कई को उनके घरों और आसपास के इलाकों से अगवा किया था, तबसे इज़रायल ने हमास और उसके कार्यकर्ताओं के ख़िलाफ़ कठोर सैन्य अभियान शुरू कर रखा था। लेकिन इस संघर्ष के बीच सबसे ज्यादा पीड़ा गाज़ा के आम नागरिकों को झेलनी पड़ी।

इस संघर्ष में लगभग 60,000 सामान्य गाज़ावासी नागरिक मारे गए। हमास ने चार बंधकों के शव भी लौटा दिए हैं। इन शवों के सौंपने की प्रक्रिया बेहद दुखद और शोकपूर्ण रही।

बंधकों और कैदियों की इस आपसी रिहाई के बाद, इस शांति योजना के मुख्य सूत्रधार डॉनल्ड ट्रंप ने इज़रायली संसद को संबोधित करते हुए घोषणा की कि गाज़ा में युद्ध अब समाप्त हो चुका है। उन्होंने कहा कि यह लंबा चला टकराव अब खत्म हो गया है।

हालाँकि, यह शांति प्रक्रिया का यह पहला नतीजा है, अब भी कई कठिन और जटिल मुद्दे बाकी हैं, जिनका समाधान किया जाना है। इनमें सबसे बड़ा और प्रमुख मुद्दा होगा हमास के लड़ाकों को निशस्त्र करना।

लेकिन हमास ने अपने हथियार डालने से इनकार कर दिया है। अब देखना यह होगा कि इज़रायल और अमेरिका इस पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं, क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति ने हमास के हथियार डलवाने का वादा किया था।

अगला मुश्किल कदम होगा गाज़ा के प्रशासन के लिए ऐसी व्यवस्था तैयार करना जो हमास से स्वतंत्र हो। शांति समझौते की एक शर्त यह थी कि हमास अब गाज़ा में नहीं रहेगा। लेकिन यह बात कुछ कमज़ोर नज़र आ रही है। ऐसी रिपोर्टें हैं कि राष्ट्रपति ट्रंप अब पूर्व ब्रिटिश प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर को इस प्रक्रिया में शामिल करने के विचार से पीछे हट गए हैं।

इन सभी अनिश्चितताओं के बावजूद, इतनी जल्दी युद्धविराम होना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। गाज़ा में बंदूकों की आवाज़ें अब थम चुकी हैं।

इन मुद्दों के समाधान के लिए ट्रंप ने युद्धविराम के तुरंत बाद एक शांति सम्मेलन का प्रस्ताव रखा। मिस्र के शर्म अल शेख शहर में डॉनल्ड ट्रंप की अध्यक्षता में होने वाली इस शांति वार्ता

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- हालांकि, अभी पूर्ण शांति आने में कई बाधाएँ साफ दिख रही हैं, जैसे हमास से उनके हथियार छुड़वा देना।
- हमास ने अपने हथियार समर्पण करने से पूर्णतः इनकार कर दिया है, क्या इज़रायल इसको स्वीकार कर लेगा।
- इन मुद्दों को सुलझाने के लिए ट्रंप ने शांति वार्ता आयोजित की है, शर्म-अल-शेख में, जिसमें बीस देश भाग ले रहे हैं।
- शांति वार्ता का दौर लंबा और कठिन होगा, पर, अभी तो गाज़ा में बंदूकें शांत हो गईं, यह अपने आप में भारी खुशखबरी है।

तीन विद्वानों को अर्थशास्त्र का नोबेल

स्टॉकहोम, 13 अक्टूबर। रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज ने सोमवार को साल 2025 के लिए अर्थशास्त्र का नोबेल सम्मान जोएल मोकिर,फिलिप अघियन और पीटर होविट को देने की घोषणा की।

अकादमी ने इन अर्थशास्त्रियों के नामों की घोषणा करते हुए कहा'' मोकिर ने हमें यह बताया कि कैसे नवाचार प्रगति के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। उन्होंने बताया कि प्रौद्योगिकी तेज़ी से आगे बढ़ ती है और हम सभी को प्रभावित करती है। नए उत्पाद और उत्पादन विधियाँ पुराने उत्पादों और उत्पादन विधियों का स्थान ले लेती हैं। इस प्रकार निरंतर आर्थिक विकास चलता रहता है।

जोएल मोकिर एक डच मूल के अमेरिकी-इज़रायली आर्थिक इतिहासकार हैं, जिनका जन्म नीदरलैंड के लीडेन में एक यहूदी परिवार में हुआ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- ये तीनों हैं जोएल मोकिर, फिलिप अघियन और पीटर होविट।